





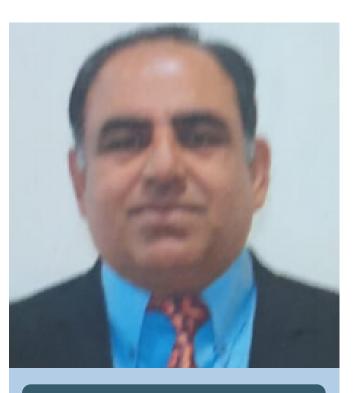
A politician divides mankind into two classes: Tools & enemies

- Friedrich Nietzsche

#### From Editor's Desk

# History judges a leader or an author – How?

History judges great person or leader or author not on the basis of frivolous anecdotes being propagated by selfish, egoistic, jealous, foolish, poorly - educated and uninformed persons for their own selfish interests but the history judges a person or leader or author who endures hardships, spends his life and his children at the point of pistol; who lives his life under constant threat not only from opponents but from his own caste community people; who sacrifices his whole life, time; who inspires, guides and motivates others with his vision, faithfulness, integrity, and determination.



Dr. Rahul Kumar Balley M.A., PhD

#### **Allama Muhammad Igbal:**

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी, सदियों रहा है दुश्मन दौर-ए-ज़माँ हमारा

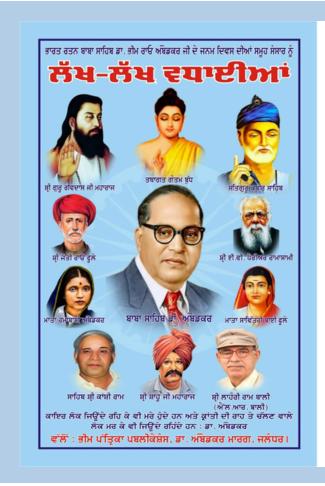
His charismatic personality attracts people towards him and he prepares future leaders, authors not only from the general public but also in his own family. What to talk of preparing future leader or author they could not even motivate his own family members to embrace chosen ideology.

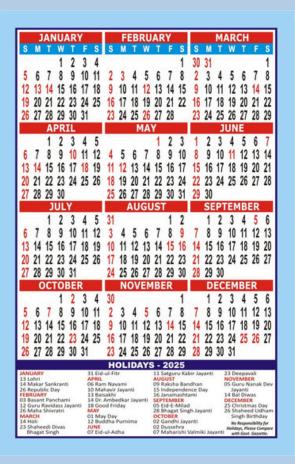
Daring and fearless person, leader or author treads a dangerous path and lives dangerously not like those who enjoy the comforts and perks of government services.

History negates a person, leader or author who works on ad hoc basis. History also negates deceptive, misleading and lousy followers of him who try to build an aura around that person, leader or author as a paragon. History also negates unethical, money-minded, followers who try to portray themselves as the most intelligent person in the world.

Mean-spirited, incognizant socially undesirable posse must read Iqbal's verse again and again. They must abandon the dream of abolishing the entity of a respectable, well-known stalwart who bravely fought the agitations and faced the bullet.















Vol.1, Issue 25

The truth has no defense against a fool determined to believe a lie."

— Mark Twain



### **Nationality**

(BAWS, vol. 8;p.31)

Nationality is a social feeling. It is a feeling of a corporate sentiment of oneness which makes those who are charged with it feel that they are kith and kin. It is at once a feeling of fellowship for one's own kith and kin and anti-fellowship feeling for those who are not one's own kith and kin. It is a feeling of "consciousness of kind" which on the one hand binds together arising out of economic conflicts or social gradations and , on the other, severs them from those who are not of that kind.it is a longing not to belong to any other group. This is the essence of what is called a nationality and national feeling

हिंदी अनुवाद राष्ट्रीयता

राष्ट्रीयता एक सामाजिक भावना है। यह एकता की सामूहिक भावना है जो इसे धारण करने वालों को यह एहसास दिलाती है कि वे एक-दूसरे के सगे-संबंधी हैं। यह एक साथ अपने सगे-संबंधियों के प्रति भाईचारे की भावना है और उन लोगों के प्रति भाईचारे-विरोधी भावना है जो उसके अपने सगे-संबंधी नहीं हैं। यह "प्रकृति की चेतना" की भावना है जो एक ओर आर्थिक संघर्षों या सामाजिक वर्गीकरणों से उत्पन्न लोगों को एक साथ जोड़ती है और दूसरी ओर, उन्हें उन लोगों से अलग करती है जो उस प्रकार के नहीं हैं। यह किसी अन्य समूह से संबंधित न होने की लालसा है। यही राष्ट्रीयता और राष्ट्रीय भावना का सार है।

(बीएडब्ल्यूएस, खंड 8; पृष्ठ 31)

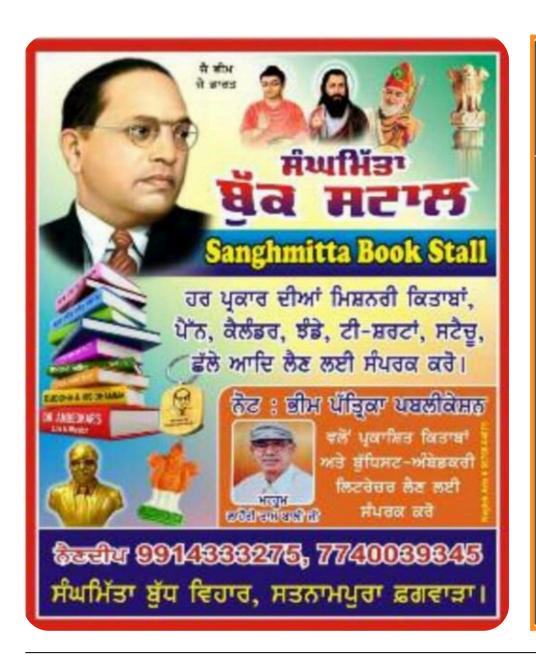


# Monopoly of Education, wealth, power by High Caste Hindus

Unfortunately, the high caste hindus are bad as leaders. They have a trait of character which often leads the hindus to disaster. This trait is formed by their acquisitive instinct and aversion to share with others the good things of life. They have a monopoly of education, wealth, and with wealth and education they have captured the State. To keep this monopoly to themselves has been the ambition and goal of their life. Charged with this selfish idea of class domination, they take every move to exclude the lower classes of the Hindus from wealth, education and power, the surest and the most effective being the preparation of scriptures, inculcating upon the minds of the lower classes of Hindus and the teaching that thier duty in life is only to serve the higher classes.

(ABWS, vol.8;p.123).













Vol.1, Issue 25

# उच्च जाति के हिंदुओं का शिक्षा, धन और सत्ता पर एकाधिकार

दुर्भाग्यवश, उच्च जाति के हिंदू नेता के रूप में बुरे होते हैं। उनके चरित्र में एक ऐसी विशेषता होती है जो अक्सर हिंदुओं को विनाश की ओर ले जाती है। यह विशेषता उनकी लोलुपता और जीवन की अच्छी चीज़ों को दूसरों के साथ साझा करने से बचने की प्रवृत्ति से उत्पन्न होती है।

शिक्षा और धन पर उनका एकाधिकार है, और धन व शिक्षा के बल पर उन्होंने राज्य पर कब्ज़ा कर लिया है। इस एकाधिकार को अपने पास रखना ही उनके जीवन की महत्वाकांक्षा और लक्ष्य रहा है। वर्ग-प्रभुत्व के इस स्वार्थी विचार से प्रेरित होकर, वे हिंदुओं के निम्न वर्गों को धन, शिक्षा और सत्ता से वंचित करने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं, जिनमें सबसे कारगर और विश्वसनीय उपाय है धर्मग्रंथों का निर्माण, हिंदुओं के निम्न वर्गों के मन में यह शिक्षा डालना कि जीवन में उनका कर्तव्य केवल उच्च वर्गों की सेवा करना है। (एबीडब्ल्यूएस, खंड 8; पृष्ठ 123)।



# Cheating in the name of Nationalism

The time for successfully maintaining in their own hands a monopoly of place and power is gone. They may cheat the lower orders of the Hindus in the name of nationalism, but they cannot cheat the Muslim majorities in the Muslim provinces and keep their monopoly of place and power (ABWS, vol.8; p.125).

हिंदी अनुवाद

# <u>राष्ट्रवाद के नाम पर</u> <u>धोखाधड़ी</u>

अपने स्थान और सत्ता पर सफलतापूर्वक एकाधिकार बनाए रखने का समय अब चला गया है। वे राष्ट्रवाद के नाम पर हिंदुओं के निचले तबके को धोखा दे सकते हैं, लेकिन वे मुस्लिम प्रांतों में मुस्लिम बहुसंख्यकों को धोखा देकर स्थान और सत्ता पर अपना एकाधिकार नहीं बनाए रख सकते (एबीडब्ल्यूएस, खंड 8; पृष्ठ 125)।

### **Book Gifting**

Kataba gift karde hoye **Sohan Lal Sampla and Babba Singh Gill** 



# बुद्ध को दरिद्रता (गरीबी) नापसंद थी!

एक बार तथागत बुद्ध श्रावस्ती में अनाथिपंडिक के जेतवनाराम में विहार कर रहे थे, तब वहां गृहपति अनाथिपंडिक आये और तथागत का अभिवादन कर उनसे प्रश्न किया- "आदमी को धनार्जन क्यों करना चाहिए?". इस पर बुद्ध ने धनार्जन करने के चार कारण बताएं-

- (अ) जिसने मेहनत, लगन, ईमानदारी व न्याय-संगत तरीके से धन कमाया, वह आनंदित रहता है, अपने माता- पिता, अपने स्त्री-बच्चों, अपने दासों, अपने कर्मकारों तथा अन्य आदिमयों को भी ऐसे ही रखता है.
- (ब) जब इस प्रकार धन प्राप्त होता है तो वह अपने मित्रों और अपने साथियों को प्रसन्न और आनंदित रखता है.
- (स) जब इस प्रकार धन प्राप्त होता है तो वह बुरे समय में अग्नि से, पानी से, राजाओं तथा चोरों, शत्रुओं तथा उत्तरा- धिकारियों से अपनी रक्षा करता है और हानि नहीं होने देकर अपने माल को सुरक्षित रखता है.
- (द) जब इस प्रकार धन प्राप्त होता है तो वह नातेदारों, अतिथियों, राजाओं और अहसायों के लिए त्याग करता है. (य) जब इस प्रकार धन प्राप्त होता है तो वह श्रमणों तथा संत-पुरुषों को दान देता है, जो अहंकार तथा प्रमाद से दूर रहते हैं, जो सही बातों को धैर्य और विनम्रता से सहन कर लेते हैं, उसका वह दान ऊंचे सदुद्देश्य सहित होता है, सुख में वृद्धि करने वाला होता है.

इस तरह अनाथिपंडिक ठीक प्रकार से समझ गया कि गौतम बुद्ध दिरद्रता की प्रशंसा करके उन्हें सांत्वना नहीं देते. वे दिरद्रता को अच्छा बताकर उसे सुखी जीवन यापन नहीं कहते हैं. (संदर्भ-बाबासाहेब डॉ. अंबेडकर द्वारा लिखित विश्व-प्रसिद्ध ग्रंथ- "बुद्ध और उनका धम्म" में वर्णित बुद्ध की धम्म-देशनाओं का सार).



### Sad Demise of "Shri Dhanpat Rattu Ji"

Renowned Ambedkarite Shri Dhanpat Rattu passed away on October 27, 2025. Shri Rattu Ji remained active in the propagation of Buddhism and Ambedkar Mission throughout his life. His demise is an irrepareble loss to the family and ambedkar mission. We express our condolences to the Rattu family in such a sad hour and pay tribute to Shri Dhanpat Rattu ji.









#### Vol.1, Issue 25

### अंबेडकर भवन जालंधर में निःशुल्क नेत्र जांच एवं स्क्रीनिंग शिविर का आयोजन













<u>ट्रस्ट के पदाधिकारी बीबी महेंद्र रत्तू और मेडिकल स्टाफ का सम्मान करते हुए</u>





चिकित्सा शिविर की कुछ झलकियां।

जालंधर : अंबेडकर भवन ट्रस्ट (रजि.) के वित्त सचिव बलदेव राज भारद्वाज ने एक प्रेस नोट जारी कर बताया कि भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीम राव अंबेडकर 27 अक्टूबर, 1951 को जालंधर आए थे और लाखों लोगों को संबोधित किया था। प्रख्यात अंबेडकरवादी और भीम पत्रिका के प्रधान संपादक मरहूम श्री लाहौरी राम बाली ने अपने सहयोगी सेठ करम चंद बाठ की मदद से 1963 में एक-एक रुपया एकत्र कर बाबा साहेब के चरणों से छुई लगभग साढ़े छह कनाल जमीन खरीदी और 'अंबेडकर भवन ट्रस्ट' के नाम से अपना ट्रस्ट स्थापित किया और फिर उस ऐतिहासिक स्थान पर एक आलीशान अंबेडकर भवन का निर्माण कराकर बाबा साहेब की विरासत को स्थापित किया। भारद्वाज ने कहा कि अंबेडकर भवन ट्रस्ट (रजि.) की ओर से नेशनल आई केयर हॉस्पिटल जालंधर द्वारा आज यानि 26 अक्टूबर को ऐतिहासिक स्थल अंबेडकर भवन, डॉ. अंबेडकर मार्ग, जालंधर में '27 अक्टूबर, 1951 - बाबा साहेब के आगमन दिवस' को समर्पित एक निःशुल्क नेत्र जांच एवं स्क्रीनिंग शिविर का आयोजन किया गया। भारद्वाज ने आगे बताया कि डॉ. पीयूष सूद के नेतृत्व में नेत्र विशेषज्ञों की एक टीम ने 200 से अधिक लोगों की आंखों की जांच की और 48 लोगों की आंखों में लेंस लगाने के लिए चुना गया। ऑपरेशन नेशनल आई केयर हॉस्पिटल, कपूरथला रोड, जालंधर में किए जाएंगे, आधुनिक तकनीक का उपयोग करके आंखों के लेंस डाले जाएंगे और दवाइयां भी मुफ्त दी जाएंगी। उन्होंने कहा कि मरहूम राम प्रकाश रत्तू की पत्नी बीबी महिंदो रत्तू ने अपने रत्तू परिवार की ओर से नेत्र शिविर के आयोजन में पूर्ण सहयोग दिया। अंबेडकर भवन ट्रस्ट द्वारा बीबी महिंदो रत्तू, डॉ. अमनप्रीत सिंह, वरिंदर जी और मैडम प्रीति को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर ट्रस्ट के अध्यक्ष सोहन लाल जी, महासचिव डॉ. जी.सी. कौल, वित्त सचिव बलदेव राज भारद्वाज, ट्रस्टी हरमेश जस्सल, चरण दास संधू, डॉ. महेंद्र संधू, अंबेडकर मिशन सोसाइटी पंजाब के उपाध्यक्ष प्रोफेसर बलबीर, पूर्व राजदूत रमेश चंद्र, हिर सिंह थिंद, प्रोफेसर अरिंदर सिंह, डॉ. सत पाल, तिलक राज, निर्मल बिनजी, एडवोकेट कुलदीप भट्टी, अध्यक्ष अखिल भारतीय समता सैनिक दल पंजाब इकाई और अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

--बलदेव राज भारद्वाज

वित्त सचिव, अंबेडकर भवन ट्रस्ट (रजि.)









### <u>NEWS</u>

# So called Brahmins spreading lies about Dr. Ambedkar Ambedkar only the architect of Indian Constitution

In his article (A reading of a revisionism in constitutional history) appeared in The Hindu, Oct 17,2025

Sanjay Hedge wrote: Sir B.N. Rau a distinguished civil servant and jurist, was appointed constitutional advisor in July 1946. His assignment was technical and preparatory.

Rau's draft provided the order and structure. Ambedkar gave the Constitution its moral depth. The provisions on Fundamental Rights, Directive Principles, and affirmative action bear his imprint. His speeches in the Assembly made the Constitution a living moral philosophy.

Ambedkar was the reformer. Rau deserves admiration as a brilliant advisor. Ambedkar deserves reverence for the Constitution's moral Architect.

Ambedkar's vision of liberty, equality and fraternity have defined the Indian Republic. To diminish his role is to betray the Republic 's founding promise. Rau built the structure; Ambedkar filled it with justice. Dr. Ambedkar remains the architect and moral founder of modern India. To deny the truth is to deny the republic.

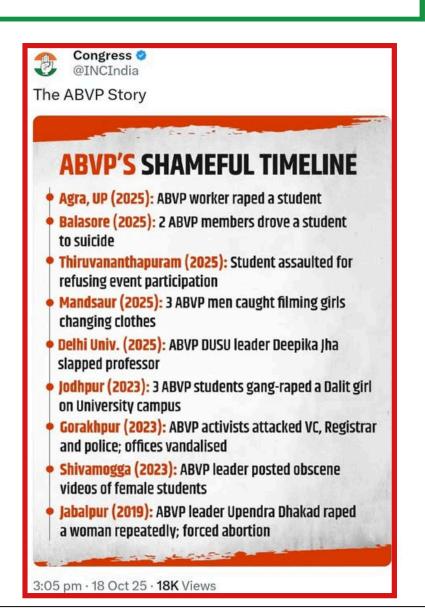
#### हिंदी अनुवाद

## <u>डॉ. अंबेडकर के बारे में झूठ फैला रहे तथाकथित ब्राह्मण - अंबेडकर ही</u> भारतीय संविधान के निर्माता

द हिंदू, 17 अक्टूबर, 2025 में प्रकाशित अपने लेख (संवैधानिक इतिहास में संशोधनवाद का एक पाठ) में संजय हेगड़े ने लिखा: सर बी.एन. राव, एक प्रतिष्ठित सिविल सेवक और विधिवेत्ता, जुलाई 1946 में संवैधानिक सलाहकार नियुक्त किए गए थे। उनका कार्यभार तकनीकी और प्रारंभिक था। राव के मसौदे ने संविधान को एक व्यवस्थित और संरचित संरचना प्रदान की। आंबेडकर ने संविधान को नैतिक गहराई प्रदान की। मौलिक अधिकारों, नीति निर्देशक सिद्धांतों और सकारात्मक कार्रवाई संबंधी प्रावधानों पर उनकी छाप है। संविधान सभा में उनके भाषणों ने संविधान को एक जीवंत नैतिक दर्शन बना दिया।

आंबेडकर एक सुधारक थे। एक उत्कृष्ट सलाहकार के रूप में डॉ. राव प्रशंसा के पात्र हैं। संविधान के नैतिक शिल्पी होने के नाते आंबेडकर आदर के पात्र हैं। स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के आंबेडकर के दृष्टिकोण ने भारतीय गणराज्य को परिभाषित किया है। उनकी भूमिका को कम करना गणराज्य के मूल वादे के साथ विश्वासघात है। डॉ. राव ने इस ढांचे का निर्माण किया; डॉ. आंबेडकर ने इसे न्याय से परिपूर्ण किया। डॉ. आंबेडकर आधुनिक भारत के शिल्पी और नैतिक संस्थापक बने हुए हैं। सत्य को नकारना गणराज्य को नकारना है।











Vol.1, Issue 25

# उत्तर प्रदेश: दलित उत्पीड़न का अड्डा

उत्तर प्रदेश में 2011 की जनगणना के अनुसार दिलतों (अनुसूचित जाति) की जनसंख्या 4.13 करोड़ थी जो उत्तर प्रदेश की कुल आबादी का 21.6% है। वैसे तो पहले भी उत्तर प्रदेश दिलतों के विरुद्ध अपराधों में अग्रगणी रहा है। उक्त रिपोर्ट के आंकड़ों भी यह दर्शाते हैं कि उत्तर प्रदेश में दिलतों पर अपराध राष्ट्रीय दर से अधिक है जैसा कि निम्नलिखित विश्लेषण से प्रदर्शित होता है:-

दिलतों के विरुद्ध कुल अपराध: उक्त अविध (2023) में कुल 15,130 अपराध घिटत हुए जिसकी दर (अपराध प्रित एक लाख आबादी) 36.6 है जबिक राष्ट्रीय दर 29.2 है। इससे स्पष्ट है कि उत्तर प्रदेश में दिलतों पर अपराध की दर राष्ट्रीय दर से काफी अधिक है। एससी/एसटी अत्याचार निवारण अधिनियम 1989 के अंतर्गत अपराध: उक्त अविध में उत्तर प्रदेश में दिलतों के विरुद्ध आईपीसी सिहत एससी/एसटी एक्ट के 12,359 अपराध घिटत हुए और अपराध की दर 29.9 थी जबिक राष्ट्रीय दर 27.1 रही थी। अतः यह आँकड़े भी दिलतों पर राष्ट्रीय दर से अधिक अत्याचार होने को दर्शाते हैं।

हत्या का प्रयास: वर्ष 2023 में उत्तर प्रदेश में दलितों के विरुद्ध हत्या के प्रयास के 72 मामले घटित हुए और अपराध की दर 0.4 थी जबिक उक्त अपराध की राष्ट्रीय दर 0.2 थी। इस प्रकार उत्तर प्रदेश में दलितों के विरुद्ध हत्या के प्रयास के मामलों की दर राष्ट्रीय दर से दुगनी थी।

**लैंगिक उत्पीड़न:** उक्त अविध में उत्तर प्रदेश में दलित महिलाओं के विरुद्ध लैंगिक उत्पीड़न के 203 अपराध हुए जिसकी दर 0.5 थी जबिक राष्ट्रीय दर 0.3 थी। इससे स्पष्ट है कि उक्त अविध में उत्तर प्रदेश में दलित महिलाओं के लैंगिक उत्पीड़न के मामले राष्ट्रीय दर से अधिक रहे।

दिलत महिलाओं को निर्वस्त्र करने का अपराध: उत्तर प्रदेश में उक्त अविध में दिलत महिलाओं को निर्वस्त्र करने के 95 अपराध घटित हुए जिसकी दर 0.2 थी जो राष्ट्रीय दर 0.1 से दुगनी थी।

दिलत महिलाओं का अपहरण: वर्ष 2023 में उत्तर प्रदेश में दिलत महिलाओं के अपहरण के 379 मामले हुए जिसकी अपराध दर 0.9 थी जो राष्ट्रीय दर 0.4 से दुगनी से अधिक थी। इससे उत्तर प्रदेश में महिलाएं खास करके दिलत महिलाएं कितनी सुरिक्षत हैं, की जमीनी सच्चाई उजागर हो जाती है।

दिलत महिलाओं का विवाह के लिए बाध्य करने हेतु अपहरण: उक्त अविध में उत्तर प्रदेश में दिलत महिलाओं का विवाह के लिए बाध्य करने हेतु अपहरण के 207 मामले हुए जिसकी अपराध दर 0.5 थी जो राष्ट्रीय दर 0.2 से दुगनी से भी अधिक थी। इससे से भी दिलत महिलाओं के असुरक्षित होने की स्थिति प्रदर्शित होती है।

बलात्कार: उक्त अविध में दिलत महिलाओं के बलात्कार के 645 अपराध घटित हुए जिसकी अपराध दर 1.6 थे जो राष्ट्रीय दर 2.1 से कम थी। इस संबंध में यह भी ध्यान रखना होगा कि यह आँकड़े बहुत विश्वसनीय नहीं हैं क्योंकि काफी मामलों में तो पीड़िता ही थाने पर रिपोर्ट लिखाने नहीं जाती। दूसरे जो थाने पर जाती भी है वहाँ आसानी से रिपोर्ट लिखी भी नहीं जाती। बहुत सारे मामलों में पुलिस द्वारा जानबूझ कर पीड़िता की तुरंत डाक्टरी नहीं कराई जाती जिससे महत्वपूर्ण साक्ष्य नष्ट हो जाता है। काफी मामलों में पुलिस वाले प्रभावशाली बलात्कारियों से समझौता करने का दबाव बनाते हैं।

अन्य अपहरण: वर्ष 2023 में उत्तर प्रदेश में दलितों के अन्य अपहरण के 155 मामले हुए और अपराध की दर 0.4 थी जो राष्ट्रीय दर 0.1 से चार गुणा अधिक थी।

अपराधिक अभित्रास: उक्त अवधि में दलितों के विरुद्ध आपराधिक अभित्रास के 1505 मामले घटित हुए थे जिसकी अपराध दर 3.6 थी जो राष्ट्रीय दर 2.3 से 1-1/2 गुणा अधिक थी।

अन्य आईपीसी अपराध: वर्ष 2023 में उत्तर प्रदेश में दलितों के विरुद्ध अन्य आईपीसी के 5814 अपराध घटित हुए जिस की अपराध दर 14.1 थी जो राष्ट्रीय दर 8.6 से बहुत अधिक थी।

एससी/एसटी अत्याचार निवारण एक्ट के अपराध: उक्त अविध में उत्तरप्रदेश में दिलतों के विरुद्ध उक्त एक्ट के 2771 अपराध घटित हुए जिसकी अपराध दर 6.7 जो राष्ट्रीय दर 2.1 से तीन गुणा अधिक थी।

**इरादतन अपमानित करना:** समीक्षाधीन अवधि में दलितों को इरादतन अपमानित करने के 792 मामले घटित हुए जिस की दर 1.9 थी जो राष्ट्रीय दर 0.8 से दुगनी से अधिक थी। इससे परिलक्षित होता है कि उत्तर प्रदेश में दलित कितना अपमानित होते हैं।



### बेबी कांबले अपनी आत्मकथा, द प्रिज़न्स वी ब्रोक.

1986 में, बेबी कांबले अपनी आत्मकथा, द प्रिज़न्स वी ब्रोक; (जिसका अंग्रेजी अनुवाद 2008 में माया पंडित ने किया) प्रकाशित करने वाली पहली महार महिला बनीं। उन्होंने जाति और पितृसत्ता के कारण महार महिलाओं के दोहरे रूप से उत्पीड़ित जीवन का गहराई से वर्णन किया है, और विभिन्न त्योहारों और शादियों के अनुष्ठानिक उत्सवों पर ध्यान केंद्रित करते हुए महिलाओं के घरेलू जीवन का विस्तार से वर्णन किया है।

अपनी पुस्तक में, वह बताती हैं: मानव प्रथाओं में, शोषण के उद्देश्य से की जाने वाली विभिन्न अंधविश्वासी प्रथाओं या मंदिरों में पूजा-अर्चना के लिए, अछूतों को ढोल के साथ मुफ्त में प्रदर्शन करना पड़ता है। कभी-कभी, उन्हें पूरेआयोजन के दौरान अपनी जांघें काटकर नृत्य करना पड़ता है। कुछ गांवों में महार महिलाओं के लिए दिवाली के बाद बचे हुए खाने को मांगना और उससे खाना बनाना एक परंपरा है जो हफ्तों तक चल सकता है। (आकांक्षा अभिस्म्रुता, शॉक, हॉरर, टेरर: कैसे दिलत कहानियां साहित्य जगत में हलचल मचा रही हैं, द हिंदू, 23 अक्टूबर, 2025, पृ.11).







### **NEWS**

<u>Upper caste Hindus are jealous of Dr Ambedkar</u>

- Ramesh Chander, Ambassador(Retd)

Jinhe Naaz Hai Hind Pe Woh Kahan Hain? – I wrote about focused propaganda to undermine Babasaheb Ambedkar in my last blog. That smear campaign is on by the likes of Advocate Anil Misra and supported by ill-advised and anti-social elements in the main stream of the society. It is unfortunate that the Thekedars of the Hindu society are blissfully silent and doing nothing to stop this



frenzy. It is time for those who talk of so called 'Samrasta' to sit and think as to how to address this immoral and anti-social activity. Why have I picked this subject again? There are a couple of immediate provocations after the sordid saga of CJI B. R. Gavai and IPS Y. Puran Kumar. Today, October 22, I have come across two incidents which lowered my head as a civilized citizen of India – i) Somewhere a dalit was made to lick his own urine allegedly on his caste count and ii) in some park or a public place Muslims conducted Namaz and the caste Hindus got perturbed and washed the place with the cow urine for Shudi of the desecrated site. Where are we heading? On this path, we cannot make India that is Bharat a Vikshit Bharat but it is a sure way to harm India and its integrity. I recall the lines of a famous song of Sahir Ludhianvi.

कहां हैं, कहां है, मुहाफ़िज़ ख़ुदी के जिन्हें नाज़ है हिन्द पर वो कहां हैं



### **Lokpal of India**

The office of Lokpal, a statutory authority, is in the news for wrong reasons, it seems. Lokpal is an anticorruption authority or body of ombudsman who represents the public interest in India which was established in 2013 by an act of parliament. Before this the basic law to check corruption was the Prevention of Corruption Act, 1988. There is no explicit provision in the constitution to deal with corruption except some provisions in the Principles of State Policy to establish the framework for a welfare state and set principles of good governance.

The directive principles of state policy emphasize the importance of public service and the welfare of the people, which indirectly serve as a moral compass against corruption. The Central Vigilance Commission (CVC) and the Central Bureau of Investigation (CBI) are government bodies that investigate corruption cases against public officials. Lokpal is a new Avatar which came into being after the campaigns of Anna Hazare, Baba Ramdev, Arvind Kejriwal among others in the early years of 2010s; precisely onwards of 2014, PM Narendra Modi's dispensation. As of now it has been observed that Lokpal gas become Jokepal where retired judges and senior bureaucrats are parked at government expenses to reward them for cooperation and liaison with the ruling outfits. It is general perception in the general public as out of "8,703 complaints. Only 24 probes. 6 prosecution sanctions" have been handled by the so clled 'anti-corruption watchdog as stated by Dr. Manu Singhvi Lokpal is currently in the news for purchasing seven luxury cars for the Lokpals at a starring cost of 5 crore each out of its Annual budget of Rs. 44.32 crore. Dr. Singhvi added, "If





this is our anti-corruption watchdog, it's more poodle than panther!" MP Priyanka Chaturvedi also lashed out at Lokpal on X, stating, "Gazab ka Jokepal at Indian taxpayers expense. Oh BMW what happened to Swadesi call by Gol?" She has a point when PM Narendra Modi pitches for Swadeshi – Vocal for Local. Is it only a slogan? I think it is time to immediately stop all imports of luxury cars for public figures and government functionaries. Our home grown brands of cars/vehicles are equally good. There is no need to import luxury cars even on the pretext of security. I hope somebody listens.

मस्जिद तो बना दी शब भर में ईमाँ की हरारत वालों ने, मन अपना पुराना पापी है बरसों में नमाज़ी बन न सका इक़बाल बड़ा उपदेशक है, मन बातों में मोह लेता है, गुफ़्तार का ग़ाज़ी बन तो गया, किरदार का ग़ाज़ी बन न सका







# <u>NEWS</u>

# Non-recognition of human Personality

Dr Ambedkar wrote: in Hinduism you will find both social and religious inequality imbedded in its philosophy:

- To prevent man from purifying himself from sin!!
- To prevent man from getting near to God!!
- To any rational person such rules must appear to be abominal and an indication of a perverse mind. It is a glaring instance of how Hinduism is a denial not only of equality but how it is denial of the sacred character of Human Personality (ABWS, vol.3; p.36).

हिंदी अनुवाद

## मानव व्यक्तित्व की

#### अ-मान्यता

डॉ. आंबेडकर ने लिखा: हिंदू धर्म में आपको सामाजिक और धार्मिक, दोनों तरह की असमानताएँ उसके दर्शन में समाहित मिलेंगी:

- मनुष्य को पाप से शुद्ध होने से रोकना!!
- मनुष्य को ईश्वर के निकट जाने से रोकना!!
- किसी भी विवेकशील व्यक्ति को ऐसे नियम घृणित और विकृत मानसिकता का संकेत प्रतीत होंगे। यह इस बात का ज्वलंत उदाहरण है कि कैसे हिंदू धर्म न केवल समानता का खंडन करता है, बल्कि मानव व्यक्तित्व के पवित्र चिरत्र का भी खंडन करता है.

(एबीडब्ल्यूएस, खंड 3; पृष्ठ 36)।



### अंबेडकर का प्रतिवाद

14 अक्टूबर, 1956 को बी.आर. आंबेडकर का बौद्ध धर्म में परिवर्तन आधुनिक भारत के इतिहास में एक ऐतिहासिक घटना थी जिसने इसके सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य की रूपरेखा बदल दी।

जब कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने मंगलवार को एक सोशल मीडिया पोस्ट में आंबेडकर के बौद्ध धर्म में दीक्षा की वर्षगांठ पर प्रकाश डाला, तो यह किसी वरिष्ठ कांग्रेस नेता द्वारा इस घटना की दुर्लभ स्वीकृति थी, क्योंकि तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू भी इस पर "चुप" रहे थे।

रमेश का बयान इस मुद्दे पर कांग्रेस की पूर्ण वापसी की कोशिश को दर्शाता है। अपने जीवनकाल में, आंबेडकर कांग्रेस और महात्मा गांधी के आलोचक थे, और गांधी के हरिजन आंदोलन को एक "हिंदू सुधार" मानते थे जिसका उद्देश्य दलितों को हिंदू धर्म से जोड़े रखना था, और जिससे उन्होंने बौद्ध धर्म अपनाकर "मुक्ति" पाने की कोशिश की थी।



Dr. B. R. Ambedkar

पोल के अनुसार, अंबेडकर ने जून 1956 में प्रबुद्ध भारत में लिखा था कि सावरकर उनके खिलाफ "आतंक फैलाते" रह सकते हैं, लेकिन यह उन्हें बौद्ध धर्म के मार्ग पर चलने से नहीं रोकेगा। "मैंने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया है। अब इस धर्म का पूरे भारत में प्रसार होना चाहिए। इसके लिए सभी को मिलकर काम करना होगा," अंबेडकर ने कहा। "जब मैं हिंदू था, तब मैंने जो अपमान सहा, वह आप सभी जानते हैं। लेकिन आज, मैं गर्व से कहता हूँ कि अब मैं बौद्ध धर्म का अनुयायी हूँ। सावरकर के बयान चाहे कितने भी असंवेदनशील क्यों न हों, मुझे परवाह नहीं, क्योंकि मैं सत्य और करुणा के मार्ग पर चलता हूँ।"

उन्होंने कहा, "बौद्ध धर्म की लहर आ गई है और यह कभी पीछे नहीं हटेगी।" उन्होंने कहा, "सभी को इस लहर में शामिल होना चाहिए और सामाजिक परिवर्तन के लिए काम करना चाहिए। हमारा समाज प्रगति चाहता है, इसलिए सभी जातियों, धर्मों और संप्रदायों के लोगों को इसमें भाग लेना चाहिए।" उन्होंने आगे कहा, "अगर सावरकर मुझे नर्क में भी भेज दें, तो भी मुझे उस नर्क का डर नहीं है। मैं बुद्ध के मार्ग पर चलते हुए जीवन व्यतीत करूँगा। (written by Vikas Pathak, Indian Express, Translated in Hindi by SR Darapuri, Ex IPS).

# उत्तर प्रदेश में राजकोष की बर्बादी

कौन कहता है कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है? क तरफ़, भाजपा शासित राज्य सरकारें एक ख़ास धर्म को बढ़ावा देने पर करोड़ों रुपये बर्बाद कर रही हैं, जबिक भारतीय संविधान में इस तरह की बर्बादी को रोकने के कई अनुच्छेद मौजूद हैं। दूसरी तरफ़, मुसलमानों, ईसाइयों, बौद्धों और सिखों के धार्मिक स्थलों को चलाने के लिए वित्तीय संकट का सामना करना पड़ रहा है। नीचे दिए गए आँकड़े बताते हैं कि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री आदित्यनाथ योगी द्वारा खर्च की गई भारी धनराशि सरकारी खजाने पर वित्तीय बोझ बनेगी और उनके बाद आने वाली पीढ़ियों को भारी नुकसान होगा।

- कुंभ मेला (2025, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश): उत्तर प्रदेश सरकार ने इस आयोजन के लिए बुनियादी ढाँचे, स्वच्छता, सुरक्षा और प्रचार पर रिकॉर्ड ₹70 बिलियन (लगभग £640 मिलियन) का निवेश किया, जिसमें अनुमानित 400 मिलियन श्रद्धालु शामिल हुए। इसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की तस्वीरों वाला एक राष्ट्रव्यापी अभियान भी शामिल था। इस उत्सव को धार्मिक महत्व और आधुनिक विकास के मिश्रण के रूप में तैयार किया गया था, जिसमें मोदी स्वयं अनुष्ठानों में शामिल हुए। हालाँकि उपस्थिति ने रिकॉर्ड तोड़ दिए, जनवरी 2025 में भीड़ की भारी भीड़ के कारण कम से कम 30 लोगों की मृत्यु हो गई, जिससे सार्वजनिक संसाधनों द्वारा वित्त पोषित रसद संबंधी चुनौतियों पर प्रकाश डाला गया।
- अयोध्या दीपोत्सव (19 अक्टूबर, 2025, उत्तर प्रदेश): राज्य सरकार ने एक भव्य दिवाली समारोह का आयोजन किया, जिसमें सरयू नदी के किनारे 1,50,000 तेल के दीये जलाए गए, 2,100 कलाकारों द्वारा विश्व रिकॉर्ड आरती, प्रकाश और ध्विन शो और आतिशबाजी की गई। मुख्यमंत्री आदित्यनाथ ने इस आयोजन का नेतृत्व किया, जिसे भगवान राम की वापसी के प्रतीक और पर्यटन आकर्षण के रूप में प्रचारित किया गया। खर्च के सटीक आंकड़े सार्वजिनक रूप से नहीं बताए गए, लेकिन विपक्षी नेताओं ने दीप खरीदने और अनुष्ठानों के आयोजन के लिए सार्वजिनक धन के उपयोग पर सवाल उठाए, और इसी तरह के पिछले आयोजनों के आधार पर करोड़ों रुपये की लागत का अनुमान लगाया।





# <u>NEWS</u>

# <u>विस्फोट। नामकरण के संबंध में स्थिति स्पष्ट नहीं है।</u>

मनुस्मृति का यह दावा कि ब्रह्मा ने वेदों का अध्ययन करने के बाद उनके शब्दों के आधार पर संसार की वस्तुओं का नामकरण किया, कोई विशेष अर्थ नहीं रखता। यदि वेद पहले से विद्यमान थे और वस्तुओं की रचना बाद में हुई, तो ब्रह्मा को कैसे पता चला कि वेदों में प्रत्येक वस्तु का क्या नाम है? ब्रह्मा को वेदों में गो शब्द लिखा हुआ मिला, लेकिन यह किसका संदर्भ देता है—गाय का या भैंस का? वेदों में स्पष्ट रूप से यह नहीं लिखा है कि इसे गो कहा जाता है। भले ही वस्तुओं की रचना पहले हुई हो और वेद बाद में प्रकट हुए हों, फिर भी वे यह निश्चित रूप से नहीं बता सकते कि उनमें प्रयुक्त नाम किस पदार्थ, पशु या वस्तु का संदर्भ देता है। यदि हम कहें कि ब्रह्मा जानते थे कि किसे गो कहना है और किसे अश्व कहना है, तो प्रश्न उठता है: ब्रह्मा को वेदों की क्या आवश्यकता थी, जबिक वे पहले से ही नाम जानते थे? तो फिर इस कथन का क्या अर्थ है कि ब्रह्मा ने वेदों के शब्दों के आधार पर वस्तुओं के नाम और कार्य निर्धारित किए? उनके दावों की सत्यता या असम्भवता की जाँच स्वतंत्र प्रमाणों के प्रकाश में की जानी चाहिए, क्योंकि उनके विचारों से असहमत ग्रंथों और लेखकों ने सदियों से उनके बारे में संदेह व्यक्त किया है। उदाहरण के लिए, मीमांसा शास्त्र के प्रख्यात विद्वान कुमारिल भट्ट ने लिखा है कि यह संदिग्ध है कि विश्व प्रलय के समय वेद व्यक्ति—प्रजापति—में —में सुरक्षित रहे।

(Sharma S.K, (2010), Manusmriti in 21st Century Vishv Vijay Pte. Ltd.p. 272.



# Kanshi Ram Promoted Caste system, the Mayawati followed suit

Kanshiram and Mayawati transformed the slogan 'abolish caste system' into 'promote caste system' to mobilize dalits for the restoration of their caste identity and self-esteem.

#### **Kanshiram said:**

In 1962–63, when I got the opportunity to read Ambedkar's book Annihilation of Caste I also felt that it was perhaps possible to eradicate casteism from society. But later, when I studied the caste system and its behaviour in depth, there was a gradual modification in my thoughts. I have not only gained knowledge about caste from the books but from my personal life as well. Those people who migrate in large numbers from their villages to big cities like Delhi, Mumbai and Kolkata take no possessions with them but their caste. They leave behind their small huts, land and cattle, etc. in the village and settle in slums, near sewers and railway tracks, with nothing else but their one and only possession—their caste. If people have so much affection for their caste, then how can we think of annihilating it? That is why I have stopped thinking about the annihilation of caste. (Badri Narayan (2014), Kanshi Ram: Leader of the Dalits, Penguin, p.73.



Sh. Kanshi Ram

#### हिंदी अनुवाद

# कांशीराम ने जाति व्यवस्था को बढ़ावा दिया, मायावती ने भी यही किया

कांशीराम और मायावती ने दलितों को उनकी जातिगत पहचान और आत्म-सम्मान की पुनर्स्थापना के लिए संगठित करने हेतु 'जाति व्यवस्था उन्मूलन' के नारे को 'जाति व्यवस्था को बढ़ावा' में बदल दिया।

#### कांशीराम ने कहा:

1962-63 में, जब मुझे अंबेडकर की पुस्तक "जाति का विनाश" पढ़ने का अवसर मिला, तो मुझे भी लगा कि समाज से जातिवाद का उन्मूलन संभव है।

लेकिन बाद में, जब मैंने जाति व्यवस्था और उसके व्यवहार का गहराई से अध्ययन किया,

तो मेरे विचारों में धीरे-धीरे बदलाव आया। मैंने जाति के बारे में न केवल किताबों से, बल्कि अपने निजी जीवन से भी ज्ञान प्राप्त किया है। जो लोग बड़ी संख्या में अपने गाँवों से दिल्ली, मुंबई और कोलकाता जैसे बड़े शहरों में पलायन करते हैं, वे अपने साथ अपनी जाति के अलावा कोई संपत्ति नहीं ले जाते। वे गाँव में अपनी छोटी-छोटी झोपड़ियाँ, ज़मीन और मवेशी आदि छोड़ देते हैं और झुग्गियों में, नालियों और रेल की पटिरयों के पास, बस जाते हैं, और उनके पास अपनी एकमात्र संपत्ति - अपनी जाति - के अलावा कुछ नहीं होता। अगर लोगों को अपनी जाति से इतना लगाव है, तो हम उसे खत्म करने के बारे में कैसे सोच सकते हैं? इसीलिए मैंने जाति के उन्मूलन के बारे में सोचना बंद कर दिया है। (बद्री नारायण (2014), कांशीराम: दिलतों के नेता, पेंगुइन, पृ.73.







Vol.1, Issue 25

# Bhimrao Yashwant Ambedkar

दिनांक 28 अक्टूबर 2025 (मंगलवार) को किशन उत्सव पैलेस, कैंजरी रोड, दिबियापुर, जनपद- औरैया में आयोजित श्रामनेर/बौद्धाचार्य प्रशिक्षण शिविर समापन समारोह एवं बौद्ध महासम्मेलन में उपस्थित होकर धम्म एवं सामाजिक जागरूकता के इस महान कार्यक्रम का हिस्सा बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

आयोजकों व सभी श्रद्धेय भन्तेजनों को हृदय से धन्यवाद जिन्होंने यह प्रेरणादायी पहल की।





# <u>बाबासाहेब का मत था कि "राजनीतिक सत्ता शोषित वर्ग के सभी दुःखों</u> <u>का विनाश करने की गुरुकिल्ली नहीं हो सकती</u>

डा. अंबेडकर दिलत राजनीति के जनक माने जाते हैं। उन्होंने ही सबसे पहले 1936 में स्वतंत्र मजदूर पार्टी, 1942 में शैडयूलड कास्ट्स फेडरेशन और 1956 में रिपब्लिकन पार्टी आफ इंडिया (आरपीआई) बनाई थी। इन पार्टियों में एक खास बात यह थी कि शैडयूलड कास्ट्स फेडरेशन को छोड़ कर कोई भी पार्टी जाति आधारित नहीं थी। इन सभी पार्टियों का एजंडा व्यापक था जिसके केंद्र में दिलत एजंडा था। यह भी सत्य है कि डा अंबेडकर ने कभी भी जाति के नाम पर वोट नहीं मांग था सिवाय शैडयूलड कास्ट्स फेडरेशन के। डा. अंबेडकर के निर्वाण के बाद 1957 से 1962 तक आरपीआई एजंडा आधारित राजनीति करती रही तब तक उसकी उपलब्धियां काफी अच्छी रहीं परंतु बाद में कांग्रेस द्वारा दिलत नेताओं को लालच देकर फोड़ लिया गया और आरपीआई कई टुकड़ों में बाँट कर बिखर गई। आरपीआई के विघटन के बाद उत्तर भारत में कांशीराम ने बहुजन समाज पार्टी का गठन किया और घोर दिलत विरोधी पार्टी भाजपा से हाथ मिला कर तीन बार तथा एक बार स्वतंत्र तौर पर सरकार बनाई। इस पार्टी की सबसे बड़ी कमी इसका कोई भी एजंडा न होना था और न ही कोई सिद्धांत। कांशीराम जाति को काटने के लिए जाति का इस्तेमाल तथा अवसरवादी होने पर गर्व महसूस करते थे। भाजपा के साथ अवसरवादी एवं सिद्धांतहीन गठजोड़ करने का नतीजा यह हुआ कि उत्तर भारत में भाजपा तो निरंतर मजबूत होती गई और बसपा निरंतर कमजोर। वर्तमान में बसपा अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही है।

बसपा के प्रयोग से यह बात बिल्कुल स्पष्ट हो गई है कि जाति की राजनीति करने वाली पार्टी बहुत समय तक नहीं चल सकती है। यह केवल एजंडा एवं सिद्धांत ही हैं जो किसी पार्टी को बिखरने से बचाए रखते हैं। यह भी स्थापित सत्य है कि जाति की राजनीति हिन्दुत्व की राजनीति को ही मजबूत करती है जैसाकि वर्तमान में हुआ भी है।

कांशीराम राजनीतिक सत्ता को गुरुिकल्ली अर्थात सब समस्याओं का इलाज कहते थे। इसके विपरीत डॉ. बाबासाहेब का मत था कि "राजनीतिक सत्ता शोषित वर्ग के सभी दु:खों का विनाश करने की गुरुिकल्ली नहीं हो सकती। उनकी मुक्ति उन द्वारा उच्च सामाजिक दर्जा हासिल करने में ही है। क्या अब भी कहेंगे कि पॉलिटिकल पावर ही मास्टर की है? अब तक के अनुभव ने इसे गलत सिद्ध कर दिया है। उत्तर प्रदेश इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। यह भी सही है कि बाद में बाबासाहेब ने राजनीतिक सत्ता को दिलतों की समस्याओं की चाबी भी कहा था परंतु उसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा था कि राजनीतिक सत्ता का इस्तेमाल समाज के विकास के लिये किया जाना चाहिये। परंतु व्यवहार में उसका अधिकतर इस्तेमाल समाज के विकास की जगह व्यक्तिगत विकास के लिये ही किया गया। मायावती इसकी सब से बड़ी मिसाल है। अत: राजनीतिक सत्ता के साथ साथ समाज के विकास का एजेन्डा होना भी ज़रूरी है जोकि बहुजन की राजनीति में बिल्कुल गायब रहा।

#### S.R. Darapuri I.P.S.(Retd)

National President, All India Peoples Front



### कर्म-सिद्धांत.

हमें कर्म-सिद्धांत को त्याग देना चाहिए. यह भी गलत है कि माता- पिता बच्चे को केवल जन्म ही देते हैं, भविष्य नहीं. माता-पिता अपने बच्चों का भविष्य उज्जवल बना सकते हैं. यदि हम इस सिद्धांत पर चलने लग पड़े तो हम अति शीघ्र अच्छे दिन देख सकते हैं और यदि हम लड़कों के साथ-साथ लड़कियों की शिक्षा की ओर भी ध्यान देने लग जाएं तो हम और भी शीघ्र प्रगति कर सकते हैं.

इसलिए आपका मिशन- "जो भी आपके अड़ोस-पड़ोस में हैं, उन्हें यह बताना चाहिए कि विद्या पढ़ो, विद्वान् बनो."

-बाबासाहेब डॉक्टर अंबेडकर.



Homage to Most Venerable

#### GYANESHWAR BHANTEJI

With deep sorrow, we share the news that Most Venerable Gyaneshwar Bhanteji, Chief Monk of the Bhikkhu Sarigha and the Mahāparinibbāna Temple, Kushinagar, passed way today.

We, the monks and members of the Maha Bodhi Society, Bengaluru, pay our heartfelt homage to Bhanteji and share all our merits for his auspicious rebirth in Sugati, and ultimately for the attainment of Nibbāna.

Bhanteji was a revered disciple of Most Venerable Chandramani Mahāthera of Kushinagar, who was also the Pabbajjā Ācariya (preceptor) of our Most Venerable Acharya Buddharakkhita Mahāthera (Bada Bhanteji).

Throughout his noble life, Most Venerable Gyaneshwar Bhanteji earned countless honors and recognition from around the world. He maintained a warm and sympathetic connection with the Maha Bodhi Society, Bengaluru, and had recently sent two young boys for monastic education under our guidance.

His contributions to the Buddha Sāsana, especially in North India, in training monks and guiding the laity, are immeasurable. We deeply mourn his passing and express our gratitude to all his disciples, both monastic and lay, who rendered devoted service during his final days.

Nibbanassa Paccayo Hotu — May this be a cause for his Nibb $\bar{\text{a}}$ na.







### **ARTICLE**

# <u>Bheem Patrika is an Institution of Genuine Freedom, not just a Journalism</u>

Bheem Patrika or a mouthpiece of Ambedkarism does not hide anything from anyone and it is an open dynamic house of freedom of speech, which like Babasaheb Ambedkar, represents, "The whole of my life is open to you all, and I do not know of any other leader who allowed his life to be an open book to everyone."

Siddhartha renounced his regal life at the age of 29 and Bhimrao Ambedkar established his first newspaper at that age. Dr. Ambedkar's journalism: from Mooknayak (from January 31, 1920) to Prabuddha Bharat through Bahishkrit Bharat (Excluded India) and Janata (The People) worked towards liberating the India of the outcaste and building a new, enlightened India (Prabuddha Bharat).



Dr. C. D. Naik

Dr. Ambedkar constructed an architecture as a capital symbol of Magadh Empire at Dadar (Maharashtra, Bombay) called the Rajagriha. The only difference between the Buddhist Rajgriha and that of Babasaheb was this that the former was a symbol of the ancient Buddhist Kingdom while the latter is a symbol of light of the modern sovereign democratic socialist secular Republic of Enlightened world called India.

The Light of Asia, a story of the Buddha's renunciation (English versification of Lalita-vistara by Ashvaghosha in Samskrit) was composed by Sir Edwin Arnold and was published in London in 1879 reads as below:

Pray not! The Darkness will not brighten!

Ask Naught from the Silence, for it cannot speak!

Vex not your mournful minds with pious pains! Ah! Brothers, Sisters!

Seek Naught from the helpless gods by gift and hymn, Nor bribe with blood, nor feed with fruits and cakes;

Within yourselves deliverance must be sought; Each man his prison makes...

If any teach NIRVANA is to live, Say unto such they err; not knowing this Nor what light shines beyond their broken lamps, Nor lifeless, timeless, bliss.

Like this composition which is divided into eight books Babasaheb also wrote his magnum opus The Buddha and His Dhamma in Eight Books containing more than 1063 references which are not visible to a reader used to browse the Bible-like canon. This difficulty was overcome by publication a supplementary of sources and references in the 11 th volume of Writings and Speeches of Dr. Babasaheb Ambedkar, Education Department, Government of Maharashtra, Mumbai following the first endevour of this kind in Hindi by the noted monk and architect of Hindi Nagar, Wardha, Venerable Bhadant Anand Kausalyayan, who fought with Hindi banner of Purushottam Das Tandon against the Hindustani banner of the Mahatma Gandhi before Independence.

#### **Revolutionary turner of the Wheel of Dhamma**

Bheem Patrika established in 1958, and both the English and Hindi versions of which are brought out together in its editorial dated December, 1994 expressed the form of Ambedkar as the sun and that of his followers as its rays in the following words:

O, Babasaheb, thou hast awakened those in slumber by your determination, Admire at a glance their volition on this day.

O Baba, today thou art thyself in the realm of deep unconsciousness,

Come to a little awareness and admire their lightening speed and acts of brightness.

#### **Revolutionary Birsa Munda**

On the next page in the above Bheem Patrika Revolutionary Birsa Munda (1875-1890) of Ranchi was depicted as the one man army against the injustices of the contemporary Raj.

On page 3 a thousand-year old Tabo Gompa Stupa of Buddha was reported in Bheem Patrika as Ajanta of Himachal Pradesh, which was the part of the Undivided Punjab with Simla as its capital before its triple partition as India and Pakistan, Hariyana and Punjab and Himachal Pradesh during and after independence.







### <u>ARTICLE</u>

...continue page 11

#### **Divodas and Sudas**

In the Vedic age the Shudra kings of the Bharata Tribe ruled over the other tribal rulers of the time and contributed to name the Aryavarta as Bharat by their domination and prowess in the battle against the moral dispensation. Divodas was the king and his rule was succeeded by his son, Sudas. In the Mahabharata also both these names are described as Pijavana and Paijavana identified by Max Weber and Dr. Ambedkar with Divodas and Sudas. Brahmin Vasistha and Kshatriya Vishvamitra were their family priests. They are attributed with composition of the Vedic hymns also.

#### **Religion and Revolution**

Respected and learned free thinker Mr. L. R. Balley highlighted in the next pages that religious revolution is the greatest revolution surpassing all the social and political revolutions of France, Germany, Italy, Russia, India and other countries.

Religion as a dictatorial creed held the whole empire of knowledge with regard to earthly life, heaven and humanity as its absolute monopoly. Copernicus rescued Astronomy from religion. Galilio and Bruno were victims of the Biblical scriptures. Medical science is till under religion as is seen in the government and private hospitals in India. Biology and the doctrine of evolution by Darwin controlled religious encroachment in the discipline of medical science including abortion, conception, test tube baby and so on to such an extent that it could not raise its head again. It took for sciences as many as 400 years to tame religious empire which is now reduced to the narrow field of chanting, blessing, ostracization of ghosts, speculations over God, Soul, Moksha, metaphysics and psychology, rites and rituals, priesthood, and worship of a lot of hobgoblins.

#### **Dhamma and Revolution**

Dhamma is not a personal thing but a social and moral legacy of the Buddha. Buddhism as Dhamma is not a bloody revolution as prescribed by Marxism and Communism as a means to end exploitation or suffering and establish dictatorship of proletariat.

Buddhism is an ethical philosophy free from bloody sacrifices of trees, animals, and human beings. Buddhism rescued women from slavery and conferred on them the status of Bhikkhuni against traditional religions which proclaimed them as sinner (see Gita, Ch. 9, verse 32) while the Buddha equated women's words with his own and liberated the Shudras, the Untouchables and productive people who serve the society and sweat in daily life for serving the other fellow beings such as barber (Upali), Sunit (Untouchable), Sumangal (backward caste), Prakriti (Chandalika or periah), robber (Angulimal), and so on from social, economic, political and religious slavery.

According to Dr. Ambedkar revolution is a norm to decide what is wrong and what is right in view of the circumstances.

#### **Utility and Justice**

When the centre of the life of mankind is society be it antique or modern society, the orm is utility as Mill prescribed it as 'the greatest happiness of the greatest number'. But the political world had dissociated itself from gods as a part of humanity and the centre of mankind has changed to an individual as a unit of governance and under this situation the justice is the norm to judge what is wrong and what is right in case of every citizen of the world and particularly in case of every citizen of India, which has gone down on the grades of providing rights, employments, freedom of thought, expression, physical movement in any part of state of the nation, dignity of man, woman, mortality rate, pension, provident fund, health, security and fraternity with liberty to make the Indian democratic Republic as strong as it can at this juncture full of pollution, corruption, violence, atrocities, child labour, Devadasi system, trafficking of women, gender inequality, malnutrition, useful education, important research, needful fellowships, bereft of caste ridden society and private ownership, dictaterial Brahmanism unbefitting to the Mantra:

#### Sarve bhavantu sukhina, sarve santu niramaya,

#### Sarve bhadrani pashyantu, ma kaschit dukkhamagama.

i. e. under the doctrine of morality, virtues (vows), and Parmitas, under the doctrine of dependent origination, and the doctrine of Nirvana may every citizen be happy, may everyone be free from disease, may every person harbour goodwill towards every other person, human and all sentient beings and let nobody face the suffering or exploitation by means of violence as it is secured through means of persuasion erelong practised by the Emperor Asoka the Great and Dr. Ambedkar instead of use of fear, suppression and violence seen in the Marxist method and by keeping away one's way of life from dictatorial creeds of Manu, and conduct of superior caste mentality, like that of Nietzsche in Europe lest India's independence might not perish still further.

Dr. C. D. Naik,

Former Vice Chancellor of Dr. Ambedkar University of Social Science, Mhow, M.P.





# <u>NEWS</u>

### Pages from the History

In 1923 Mr. Mahomed Ali while speaking at Aligarh and Ajmer said: " However pure Mr. Gandhi character may be, he must appear to me from the point of religion inferior to any Musalman, even though he be without character.

While admitting about his statement which stirred Indian National Congress he said:' Yes, according to my religion and creed, I do hold an adulterous and a fallen Musalman to be better than Mr. Gandhi (Ambedkar, Pakistan or the Partition of India, p.302).

हिंदी अनुवाद

## इतिहास के पन्ने

1923 में अलीगढ़ और अजमेर में भाषण देते हुए श्री मोहम्मद अली ने कहा: श्री गांधी का चरित्र चाहे कितना भी शुद्ध क्यों न हो, धार्मिक दृष्टि से वे मुझे किसी भी मुसलमान से कमतर लगते हैं, भले ही वे चरित्रहीन ही क्यों न हों।

अपने उस बयान को स्वीकार करते हुए जिसने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को झकझोर दिया था, उन्होंने कहा: हाँ, मेरे धर्म और पंथ के अनुसार, मैं एक व्यभिचारी और पतित मुसलमान को श्री गांधी से बेहतर मानता हूँ (अम्बेडकर, पाकिस्तान या भारत का विभाजन, पृष्ठ 302)।

## <u>धम्मचक्र प्रवर्तन दिन मनाया गया</u>







आल इंडिया समता सैनिक दल शाखा घुगुस जिला चंदपूर (महाराष्ट्र) के द्रारा 14 अक्तूबर 2025 को धम्मचक्र प्रवर्तन दिन,बिक्षस वितरण कार्यक्रम एंव बुध्द भीम गीत कार्यक्रम संपन्न हुआ. इस कार्यक्रम मे प्रमुख उपस्थित एड. बी.टी. शुन्डे, राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार, आल इंडिया समता सैनिक दल, आयु. धानानंद शिन्दे, महा सचिव भारतीय बौद्ध महासभा जिला चंदपूर ,(महाराष्ट्र) कार्यक्रम के अध्यक्ष आयु. मनोहर कवाडे समता सैनिक दल, घुगुस तारका बनसोड, केन्द्रीय सदस्य आल इंडिया समता सैनिक दल, सरस्वती पाटील मैडम, सामाजिक कार्यकती एवं सोहन पाटील माजी महासचिव आल इंडिया समता सैनिक दल (महाराष्ट्र) एवं आयोजक कार्यक्रम कि सुरवात तथागत सम्यक समबुध्द बोधिसत्व बाबासाहेब डा.अम्बेडकर की प्रतीमा को पुष्प अर्पित कर किया गया.

14 अक्तूबर धम्मचक्र प्रवर्तन दिन पर एड.बी.टी.शेन्डे ने मार्गदर्शन किया उपस्थित वक्ताओं भी मार्गदर्शन किया.

आल इंडीया समता सैनिक दल शाखा घुगुस जिला चंदपूर (महाराष्ट्र) द्वारा 22 प्रतिज्ञा,अष्ठांगिक मार्ग एवं दस पारमिता पर हस्तलिखित प्रतियोगिता का बिक्षस वितरण भी कीया गया. पंचशील बुध्द विहार घुगुस एवं गौतमी बुध्द विहार,केमिकल वार्ड सिध्दार्थ नगर घुगुस से पहला बिक्षस कुमारी त्रिनीति पाटील, दुसरा बिक्षस सविता वनकर, तिसरा बिक्षस विजया कवाडे.

अम्रपाली बुध्द विहार से पहीला बक्षिस दिक्षा नागसेन भगत,दुसरे बिक्षस भावना कांबले, तिसरे बिक्षस प्रणाली दिपक तंबाके.

महाप्रज्ञा बुध्द विहार से पहीला बिक्षस स्वेता देवराव सोनटक्के दुसरे बिक्षस नंदनी सोनटक्के. आदर्श बुध्द विहार, उसगाव एवं करुणा बुध्द विहार, म्हातारदेवी से पहीला बिक्षस रिया उल्हास पिंपळकर, दुसरा बिक्षस सुनिता फुलझेले, तिसरा बिक्षस रेश्मा उमरे एवं तिसरा बिक्षस अरुणा सुनिल मून को दिया गया

प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी को प्रोत्साहक बिक्षस वितरण किया गया. कोल इंडिया लिमिटेड wcl से अक्तूबर में सेवानिवृत्त होने वाले हमारे आर्थिक सहायक प्रदीप बाराहाते साहेब, नुतन जिवने एवं अनिरुद्ध आवले का दल दारा सत्कार किया गया. कार्यक्रम का संचालन सोहन पाटील ने किया. कार्यक्रम को सफल करने के लिए सोहन पाटील, मनोहर कवाडे,मनोहर सावजी,मनोज एम. पाटील, तारका बनसोड मिलीन्द चांदेकर एवं दल घुगुस कि टीम ने किया गया.

ARTICLE





Vol.1, Issue 25

# संविधानाने आपल्याला काय दिले?

भारतरत्न डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या व संविधान सभेच्या दोन वर्ष अकरा महीने अठरा दिवसाच्या अथक प्रयत्नातून भारतीय संविधान निर्माण झाले. संविधानाने आपल्याला सार्वभौमत्व, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता, न्याय, स्वातंत्र्य, समता आणि बंधुत्व दिले.

ब्राह्मणी वर्णव्यवस्थेने कष्टकरी, स्त्रिया, श्रमकरी, शेतकरी वर्गाचे नाकारलेले अधिकार संविधानाने दिले. भारतीय संविधानातील कलम एकने आपल्या देशाचे नाव निश्चित केले. ते म्हणजे भारत तथा इंडिया, म्हणजे आपला देश कोणत्याही एका विशिष्ट घराण्याचा, जातीचा, धर्माचा नाही, तर तो सर्व भारतीयांचा देश आहे. आपला देश हा कोणत्याही एका विशिष्ट धर्माचा अनुनय करणार नाही किंवा कोणत्याही धर्माच्या विरोधात राहणार नाही, म्हणजेच धर्मनिरपेक्षता आपल्या संविधानाचे वैशिष्ट्ये आहे.



Dr. Alka Raj (Dhoke)

भारतीय संविधानाने समता दिली. जात, धर्म, वंश, लिंग,प्रांत,भाषा आणि जन्मस्थान यावरून कोणताही कोणालाही भेदभाव करता येणार नाही, याची हमी भारतीय संविधानाने कलम १४,१५,१६ ने दिलेली आहे. कलम १४ अंतर्गत कायद्यासमोर सर्वांची समानता. संविधानाने कायद्याचे अधिराज्य स्थापून दिले असून कायद्याच्या चौकटीतच राज्य कारभार करणे, राज्यकर्त्यांना बंधनकारक आहे. त्यामुळे राज्यकर्त्यांच्या मनमानी, बेकायदेशीर कार्याला आळा बसतो.

तसेच कायदेमंडळ,( संसद \_ लोकसभा,राज्यसभा जिथे कायदे बनतात)कार्यकारी मंडळ( राष्ट्रपती,उपराष्ट्रपती,पंतप्रधान आणि मंत्रिमंडळ) व न्यायपालिका (सुप्रीम कोर्ट, हाय कोर्ट,जिल्हा न्यायालय)स्वतंत्र असल्याने राज्यकर्त्यांच्या मनमानी कारभारास चाप बसतो. कोणत्याही स्वरूपाची अस्पृश्यता पाळता येणार नाही,याची तरतूद संविधानाने कलम १७ नुसार केलेली आहे.

प्रत्येक नागरिकाला अभिव्यक्ती स्वातंत्र्य दिले. आपले विचार वेगवेगळ्या माध्यमातून व्यक्त करण्याचे स्वातंत्र्य संविधानाने कलम १९ नुसार दिलेले आहे. स्वातंत्र्यपूर्व काळामध्ये संशोधन, लेखन आणि प्रबोधन करणाऱ्या अनेक महापुरुषांचा छळ झाला, त्यांच्या हत्या झाल्या, त्यामुळे असंख्य सृजनशील पूर्वजांना व्यक्त होता आले नाही. व्यक्त होण्याचे स्वातंत्र्य भारतीय संविधान देते.

आपल्याला कोणताही वैध व्यवसाय करण्याचे, देशांतर्गत संचार करण्याचे, देशांतर्गत स्थायिक होण्याचे स्वातंत्र्य भारतीय संविधान देते. एखाद्या गुन्हेगारांवरील आरोप सिद्ध होईपर्यंत त्याला जामीन मिळवण्याचा अधिकार संविधान देते. जीविताचा अधिकार म्हणजे जगण्याचा अधिकार भारतीय संविधानाने कलम २१ नुसार दिलेला आहे. ६ ते १४ वयोगटातील प्रत्येक भारतीय मुला-मुलींना मोफत आणि सक्तीचे शिक्षण घेण्याचा अधिकार याच कलमा अंतर्गत संविधान देते.

शासन-पोलीस यंत्रणा जर एखाद्या असहाय्य व्यक्तीवर अन्याय करत असेल, तर न्यायालयात रिट दाखल करून न्याय मागता येतो. जय भीम चित्रपटात तपासादरम्यान पोलिसांच्या मारहाणीत मृत्यू पावलेल्या आरोपीला जेंव्हा फरार घोषित केले तेंव्हा ऍड. चंद्रु हेबिअस कॉर्पसची (where is body) रिट दाखल करून त्याच्या पत्नीला न्याय मिळवून देतात, हा अधिकार संविधानातील कलम ३२ नुसार दिलेला आहे. या कलमाद्वारे थेट सर्वोच्च न्यायालयात पाच प्रकारच्या रिट दाखल करता येते. हा मूलभूत अधिकार आहे. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर कलम ३२ ला संविधानाचा आत्मा म्हणतात.( Article ३२ is heart of Indian constitution). तर कलम २२६ नुसार उच्च न्यायालयात रिट दाखल करता येते.

भारतीय संविधानाने वेठबिगारी, बालमजुरी संपुष्टात आणली. कोणत्याही स्त्री-पुरुषांची किंवा लहान मुलांची खरेदी विक्री करता येणार नाही, तसेच कोणत्याही लहान मुलांना कामगार म्हणून ठेवता येणार नाही, याची तरतूद भारतीय संविधानाने कलम २३, २४ नुसार केलेली केली. म्हणजे संविधानाने गुलामगिरी नष्ट केली.

आपापल्या धर्मानुसार धार्मिक आचरण करण्याचा अधिकार भारतीय संविधानाने कलम २५ नुसार दिलेला आहे. अल्पसंख्यांक, आदिवासी, अनुसूचित जाती, शेतकरी, महिला यांच्या विकासाची तरतूद संविधानाने केलेली आहे.सर्व जाति धर्मातील महिला आज सर्व क्षेत्रात आहेत,हे संविधानाने शक्य झाले. कलम १५, २१, ३९,५१ इत्यादी कलमानुसार महिलांचा आदर, सन्मान आणि हक्का बाबतची तरतूद आहे.

संविधानाने ज्याप्रमाणे आपल्याला हक्क अधिकार दिले, तशीच आपल्याला जबाबदारी देखील दिलेली आहे. संविधानाचा, राष्ट्रध्वजाचा आणि राष्ट्रगीताचा आदर करणे. वैभवशाली वारशाचा अभिमान बाळगणे, संमिश्र संस्कृतीचा आदर करणे. आपल्या देशाची संस्कृती एकप्रवाही नाही, आपल्या देशात वारकरी, नाथ, शाक्त, शैव, वैष्णव, महानुभव, लिंगायत, सुफी, हिंदू,जैन, बौद्ध, शीख, मुस्लिम, ख्रिश्चन, पारशी इत्यादी धर्म-संप्रदाय आहेत. चिकित्सेचे स्वातंत्र्य अबाधित ठेवून त्या सर्वांचा आदर बाळगणे, हे प्रत्येक भारतीय नागरिकाचे कर्तव्य आहे, असे संविधान कलम ५१ मध्ये सांगते. महिलांचा आदर करणे, वैज्ञानिक दृष्टिकोन बाळगणे,( म्हणजे रूढी, परंपरा,अंधश्रद्धा,कर्मकांड या पासून दूर राहणे) इत्यादी कर्तव्य संविधानाने सांगितलेली आहेत.







#### ARTICLE

Vol.1, Issue 25

#### ...continue page 14

संविधानाने आपल्याला मतदान करण्याचा, नेता निवडण्याचा, नेतृत्व करण्याचा अधिकार दिला. एखाद्या उद्योगपतीचे, नेत्यांचे आणि झोपडपट्टीमध्ये राहणाऱ्या नागरिकाच्या मताचे मूल्य एकच आहे. कोणत्याही भारतीय नागरिकाला स्थानिक स्वराज्य संस्था, विधिमंडळ, लोकसभा यामध्ये नेतृत्व करता येते.

उपेक्षित वर्गाला राजकीय, शैक्षणिक आणि प्रशासकीय प्रतिनिधित्व मिळावे, याची तरतूद संविधानाने केलेली आहे, यालाच आपण आरक्षण म्हणतो. भारतीय संविधानातील कलम ३४०, ३४१, आणि ३४२ या कलमानुसार अनुसूचित जाती, अनुसूचित जनजाती आणि इतर मागासवर्गीयांना भारतीय संविधानाने आरक्षण दिलेले आहे.

अनेक जाती, धर्म, पंथ, प्रांत, भाषा, भौगोलिक विविधता असणाऱ्या देशाला एकत्र बांधून ठेवण्याचे कार्य भारतीय संविधानाने केलेले आहे.

आपण ज्या पर्यावरणामध्ये राहतो, त्या पर्यावरणाचे रक्षण झाले पाहिजे, कारण पर्यावरणाचे रक्षण झाले तरच मानवाचे अस्तित्व टिकणार आहे. पर्यावरणाच्या रक्षणाच्या जबाबदारीची तरतूद देखील संविधानातील कलम ४८ कलम ५१ आणि कलम २१ नुसार करण्यात आलेली आहे.

भारतीय संविधान हे जगातील सर्वात मोठे लिखित संविधान आहे. हे जितके कर्तव्यकठोर आहे तितकेच लवचिक आहे. मूळ चौकटीत बदल न करता घटनादुरुस्ती करण्याची तरतूद संविधानात आहे. लोकोपयोगी अनेकवेळा घटनादुरुस्ती झालेल्या आहेत.

संविधानाचा आदर करणे, संविधानाचे संवर्धन करणे आणि संविधानाचे रक्षण करणे हे आपल्या प्रत्येक भारतीय नागरिकाचे कर्तव्य आहे. अशा लोककल्याणकारी संविधाची अंमलबजावणी २६ जानेवारी १९५० पासून झाली. यालाच प्रजासत्ताक दिन म्हणतात. २६ नोव्हेंबर १९४९ रोजी संविधान देशाला सादर केले. हा दिवस संविधान दिन म्हणून साजरा केला जातो.

#### माझा देश माझे संविधान INDIA THAT IS BHARAT

आम्ही भारताचे लोक भारतीय संविधान मंच, महाराष्ट्र राज्य

# निःशुल्क नेत्र जांच एवं स्क्रीनिंग शिविर में सभी ऑपरेशन सफल



अंबेडकर भवन ट्रस्ट (रजि.) द्वारा 26 अक्टूबर को ऐतिहासिक स्थल अंबेडकर भवन, डॉ. अंबेडकर मार्ग, जालंधर में नेशनलआईकेयर अस्पताल जालंधर द्वारा '27 अक्टूबर, 1951 - बाबा साहेब के आगमन दिवस' को समर्पित एक निःशुल्क नेत्र जांच एवं स्क्रीनिंग शिविर का आयोजन किया गया। डॉ. पीयूष सूद के नेतृत्व में नेत्र विशेषज्ञों की एक टीम ने 200 से अधिक लोगों की आंखों की जांच की और 48 लोगों की आंखों में लेंस लगाए गए। उन लोगों के ऑपरेशन नेशनलआईकेयर अस्पताल , कपूरथला रोड, जालंधर में किए गए, आधुनिक तकनीक का उपयोग करके आंखों के लेंस डाले गए और मरीजों को मुफ्त दवाइयां भी दी गईं। ऑपरेशन कराने वाले सभी मरीजों को 02 नवंबर, 2025 को अंबेडकर भवन, डॉ. अंबेडकर मार्ग, जालंधर में बुलाया गया और डॉ. अमनदीप सिंह ने उनकी जाँच की और उन्हें मुफ़्त दवाइयाँ भी दीं। डॉ. अमनदीप सिंह ने बताया कि सभी ऑपरेशन सफल रहे। इस अवसर पर अंबेडकर भवन ट्रस्ट (पंजीकृत) के ट्रस्टी डॉ. महेंद्र संधू भी उपस्थित थे। बीबी मोहिंदो रत्तू ने सभी मरीज़ों को आशीर्वाद दिया।







# <u>Ambedkar Association of NorthAmerica (AANA) Honoredwith</u> <u>the 2025 CSWE Partnersin Advancing International Education</u> (<u>PIE</u>) <u>Organization Award</u>









Denver, CO — October25, 2025 — The Councilon Social Work Education (CSWE) has named the Ambedkar Association of North America (AANA) the recipient of the 2025 Partners in Advancing International Education (PIE) Organization Award, recognizing its outstanding contributions to global social work education and social justice. The award was presented at the 71st Annual CSWE Conference in Denver, Colorado, themed "Championing Disability Justice and Dignity in Social Work." Now in its twentieth year, the PIE Awards honor individuals, students, and organizations that demonstrate leadership and innovation in advancing international social work.

Founded in 2008, Ambedkar Association of North America is a volunteer-driven nonprofit organization dedicated to uplifting marginalized communities througheducation, empowerment, and advocacy. Rooted in Dr. B.R. Ambedkar's guiding philosophy—Educate, Agitate, Organize—Ambedkar Association of North America works through local chapters across the United States and global partnerships to drive systemic change. Its mission is to foster equity by advancing community development and transformative education.

Ambedkar Association of North America's initiatives address key areas of social impact, including scholarships and school infrastructure support for underserved communities in India; digital literacy and girls' education programsimproving retention rates; and health equityprojects such as sickle cell screening and nutrition support. The organization also led emergency relief efforts during the COVID-19 pandemic, advocated for anti-caste legislation in the United States, and funded caste equity education through documentaries and awareness campaigns.

continue next page...







#### ...continue page 16

Additional programs include women's empowerment workshops that strengthen civic participation and youth leadership retreatsthat foster solidarity within the South Asian diaspora. With over 99% of donations directly funding community programs,

Ambedkar Association of North America is widely recognized for transparency, accountability, and impact. Through these grassroots efforts, Ambedkar Association of North America connects strugglesfor equality in South Asia with movements for justice in the United States. Its programs embody global solidarity and the belief that education is a tool for liberation and lasting social change. Recognition from Council on Social Work Education -CSWE.

In presenting the award, the Council on Social Work Education Commission on Global Social Work Education commended Ambedkar Association of North America for its "transformative role in linking education, empowerment, and advocacy to advance global social justice." Accepting the honor, Ambedkar Association of North America's President, Mrs. Smitha, expressed gratitude on behalf of the organization's volunteers and partners:

"Weare deeply honoredto receive this recognition from CSWE. This award celebrates not just Ambedkar Association of North America's work, but the enduring vision of Dr. B.R. Ambedkar—a world where education is the pathway to equality, and justice knows no borders."

About the Council on Social Work Education (CSWE)

Founded in 1952, CSWE is the national association representing social work education in the United States, with more than 900 accredited programs. As the sole accrediting body, CSWE advances excellence and innovation throughleadership, scholarship, and advocacy groundedin anti-racism, diversity, equity, inclusion, and belonging (ADEIB). Headquartered in Alexandria, Virginia, CSWE is committed to addressing the legacies of colonization and promoting social justice through education and research

**Media Contact** 

Press Office | AmbedkarAssociation of NorthAmerica (AANA)

board@aanausa.org | www.aanausa.org | UnitedStates



# <u>ऑल इंडिया समता सैनिक दल (Regd.) का 20 वा राष्ट्रीय अधिवेशन</u> बीकानेर राजस्थान मे दिनांक 08-11-2025 व 09-11-2025 को होगा

ऑल इंडिया समता सैनिक दल (Regd) प्रदेश यूनिट बीकानेर राजस्थान एवम जिला शाखा के सयुंक्त तत्वावधान मे दिनांक 25-10-2025 को दल के अधिवेशन के कायों को गति देने के सम्बन्ध मे कमेटी के कार्यकर्ताओं की मीटिंग मान्य. राजपाल जी बौद्ध के निवास पर हुई जिसमे दल के राष्ट्रीय चेयरमैन मान्यवर डॉ. एच. आर. गोयल सर उपस्थित थे आपने दल का 20 वा अधिवेशन जो बीकानेर शहर मै 08-11-2025 व 09-11-2025 को होने जा रहा है इस हेतु आपने आवास व्यवस्था, खाने की व्यवस्था , लाइट पानी जेनेटर , स्टेज व्यवस्था मौसम को देखते हुए रात्रि मै बिस्तर कम्बल व्यवस्था प्रोपर हो , आने वाले डेलेगेट का रजिस्ट्रेशन चाय नाश्ता समय पर हो , वाशरूम मे पूर्ण व्यवस्था हो आवश्यक एवम व्यवस्थाओं का बिंदु वार समीक्षा की गई कमेटी की बैठक समता सैनिक साथियों ने किरयान्वयन एवम सुझाव आदि हेतु समीक्षा मै भाग लिया :-भुवनेश शौर्य, मान्य. पूनम चंद गोयल, मान्य. सोहन लाल गोयल, मान्य. राजपाल बौद्ध डॉ. जे के सकरवाल, मान्य. रवि दास बौद्ध, मान्य. राज कुमार हटीला मान्य.राम लाल बांद्रा, मान्य. अशोक प्रेमी, बिमला जी बौद्ध, डॉ. एच. आर. गोयल





**BUDDHISM** 





#### Vol.1, Issue 25

# "What you think, you become. What you feel, you attract. What you imagine, you create."

- Gautama Buddha



# बुद्ध की मूल शिक्षाएं.

" जब आलसी व्यक्ति बहुत खाने वाला हो जाता है, मोटा और निंद्रालू हो जाता है, करवटें बदलता रहता है, फिर भी उसको नींद नहीं आती है, तब मंदमित वाला मुर्ख, खा-खा कर मोटे हुए सूअर के समान, संसार में बार-बार जन्म लेता रहता है, वह आलसी बार-बार गर्भ (जन्म) में आता है."- बुद्ध {नाग वर्ग (धम्म- पद-325)}.

"When a man is sluggish and gluttonous, sleeping and rolling around in bed like a fat domestic pig, that sluggard under -goes rebirth again and again."- Buddha.



"A religion to be religion of man must teach him not to dissipate his wealth. Dissipation of wealth results from being addicted to intoxicating liquors, frequent- ing the streets at unseemly hours, haunting fairs, being infacted by gambling, associat -ing with evil companions, the habit of idleness."- Buddha.

(Ref.-The world famous book- "The Buddha and His Dhamma" written by Babasaheb Dr. Ambedkar).

[28/10, 1:15 pm] satyaratnashaurya: "कोई भी धर्म आदमी का धम्म तभी हो सकता है, जब वह उसे अपने धन को बर्बाद न करने की शिक्षा दें. आदमी का धन शराब पीने की आदत से बर्बाद होता है, अनुचित समय पर रात को बाजारों में घूमने से बर्बाद होता है, मेले- तमाशे में घूमने-फिरने से बर्बाद होता है, जुए में आसक्ति से बर्बाद होता है, कुसंगति में पड़ जाने से बर्बाद होता है और आलसी हो जाने की आदत से बर्बाद होता है."-बुद्ध.

(संदर्भ- बाबासाहेब डॉ अंबेडकर द्वारा लिखित विश्व-विख्यात महान् ग्रंथ-"बुद्ध और उनका धम्म" में वर्णित बुद्ध की धम्म-देशनाओं का सार).

### **Buddhism has 3 Truths**

- Nothing is permanent
- Everything i related to one another
- One needs to let go off possession to be happy

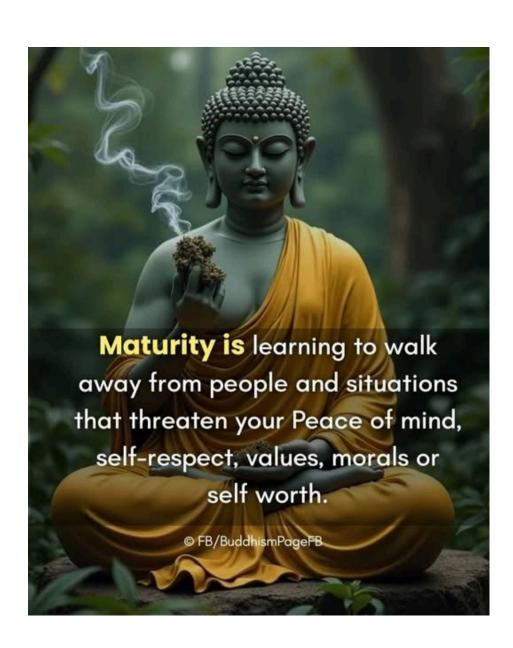
### 3 Universal Truths

- Sila- Morality & good conduct
- Samadhi- Meditation
- Prajna- Wisdom

पहले यह मेरा चित

मनमाना जिधर चाहा उधर स्वच्छंद जाता रहा, लेकिन अब मैं इसे वैसे ही काबू में रखूंगा जैसे कि अंकुशधारी महावत भड़के हाथी को वश में करता है."-बुद्ध [नाग वर्ग (धम्मपद-326)].

"The mind of mine went formely wandering about as it liked, as it listed, as it pleased but I shall now hold it in thoroughly, as the Elder who holds the hook holds the furious elephant."-Buddha.



**BUDDHISM** 





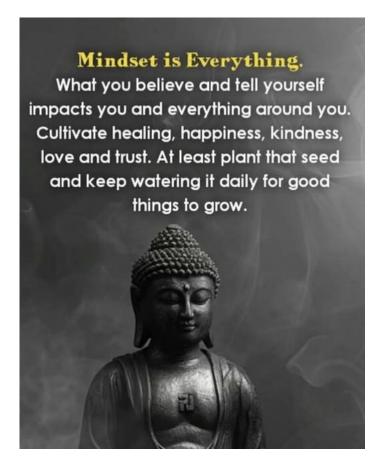
Vol.1, Issue 25

# Oral Instructions by Buddha to his pupils

There is no doubt that the Buddha formulated his teaching in oral instruction to his immediate pupils. The extent of this corpus of original Buddhist texts is as unknown as is its actual shape during the days of the Buddha. These texts were learnt by heart, transmitted, and to an unknown, but probably fairly large extent shaped and reshaped by those who handed them down, and they went thus through a considerable transformation before they reached the stage of Pali and became codified as the canon of the Theravada school written down for the first time during the reign of Vaṭṭagāmanī Abhaya (89-77 B.C.), or that of true Buddhist Sanskrit as used by Mahāsāmghikalokottaravāda school. the Gāndhārī or even Paiśācī and other languages now lost. Ref: Johannes Bronkhorst (2011) Buddhism in the shadow of Brahmanism, Brill; p.37)

# बुद<u>्ध द्वारा अपने शिष्यों को</u> मौखिक निर्देश

इसमें कोई संदेह नहीं है कि बुद्ध ने अपने तात्कालिक शिष्यों को मौखिक निर्देश के माध्यम से अपनी शिक्षाएँ तैयार कीं। मूल बौद्ध ग्रंथों के इस संग्रह का विस्तार उतना ही अज्ञात है जितना कि बुद्ध के काल में इसका वास्तविक स्वरूप। इन ग्रंथों को कंठस्थ किया गया, प्रसारित किया गया, और अज्ञात रूप से, लेकिन संभवतः काफी हद तक, उन्हें आगे बढ़ाने वालों द्वारा आकार दिया गया और पुनः आकार दिया गया, और इस प्रकार वे पाली स्तर तक पहुँचने से पहले काफी परिवर्तन से गुजरे और थेरवाद संप्रदाय के सिद्धांत के रूप में संहिताबद्ध हुए, जिसे वट्टगामणी अभय (89-77 ईसा पूर्व) के शासनकाल में पहली बार लिखा गया, या महासंघिकलोकोत्तरवाद संप्रदाय द्वारा प्रयुक्त सच्ची बौद्ध संस्कृत, गांधारी या यहाँ तक कि पैशाची और अब लुप्त हो चुकी अन्य भाषाओं के रूप में। संदर्भ: जोहान्स ब्रोंखोर्स्ट (2011) बौद्ध धर्म ब्राह्मणवाद की छाया में, ब्रिल; पृष्ठ 37)



# Brahman missionritualistic, bureaucratic & subjugation in South Asia

J. C. van Leur About South Asia he said," The disseminator of the chief process 'Indianization' was the Brahman priesthood; the aim of the 'Brahman mission' was not the preaching of any revealed doctrine of salvation, but the ritualistic and bureaucratic subjugation and organization of the newly entered regions. Wherever the process of 'Indianization' took place, 'religious' organization was accompanied by social organization — division in castes, legitimation of the ruling groups, assurance of the supremacy of the Brahmins. The colossal magical, ritualistic power of the Brahman priesthood was the most characteristic feature of history. Indian The rationalistic, bureaucratic schooling of the priesthood as the intellectual group, which went to make up its great worth, its indispensability even, for any comprehensive governmental organization, was [...] interwoven with the sacerdotal function. The Brahman priesthood developed high qualities in that field as well, but its decisive influence came from the magical, ritualistic power of domestication it in the absoluteness of its power was able to develop." Ref: Johannes Bronkhorst (2011). Buddhism in the shadow of Brahmanism, Brill; p.62).

# <u>ब्राह्मण मिशन - दक्षिण एशिया में</u> कर्मकांडी, नौकरशाही और अधीनता

जे. सी. वैन ल्यूर ने दक्षिण एशिया के बारे में कहा, भारतीयकरण; की प्रक्रिया का मुख्य प्रसारक ब्राह्मण पुरोहित वर्ग था; ब्राह्मण मिशन; का उद्देश्य मोक्ष के किसी प्रकट सिद्धांत का प्रचार करना नहीं था, बल्कि नए प्रवेशित क्षेत्रों का कर्मकांडी और नौकरशाही अधीनता और संगठन करना था। जहाँ भी भारतीयकरण की प्रक्रिया हुई, वहाँ धार्मिक संगठन के साथ-साथ सामाजिक संगठन भी था - जातियों में विभाजन, शासक समूहों का वैधीकरण, ब्राह्मणों की सर्वोच्चता का आश्वासन। ब्राह्मण पुरोहित वर्ग की विशाल जादुई, कर्मकांडी शक्ति प्रारंभिक भारतीय इतिहास की सबसे विशिष्ट विशेषता थी। बौद्धिक समूह के रूप में पुरोहित वर्ग की तर्कवादी, नौकरशाही शिक्षा, जो किसी भी व्यापक सरकारी संगठन के लिए उसके महान मूल्य, यहाँ तक कि उसकी अपरिहार्यता को पूरा करती थी, पुरोहितीय कार्य के साथ गुंथी हुई थी। ब्राह्मण पुरोहित वर्ग ने उस क्षेत्र में भी उच्च गुण विकसित किए, लेकिन उसका निर्णायक प्रभाव पालतू बनाने की जादुई, कर्मकांडी शक्ति से, यह अपनी संपूर्ण शक्ति में विकसित होने में सक्षम था। संदर्भ: जोहान्स ब्रोंखोर्स्ट (2011)।

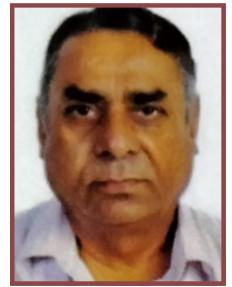






Vol.1, Issue 25

### **Donations**

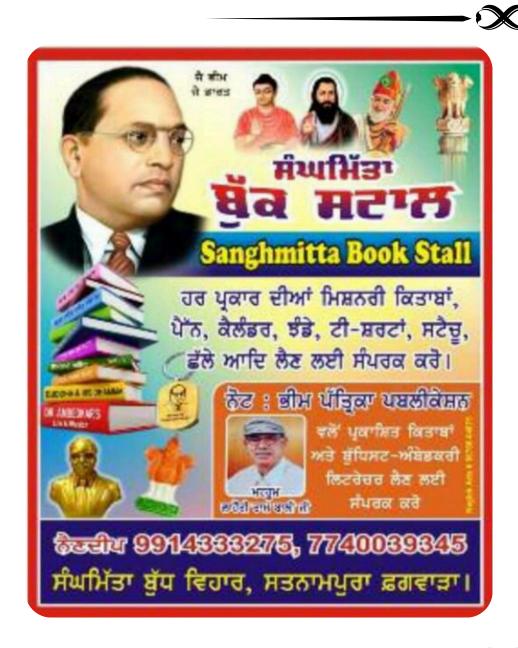


Sh. B. C. Jhuria

श्री बी सी झुरिया द्वारा ₹ 500/- एवं श्री सोहन पाटिल जी द्वारा ₹ 500/- की राशि का भीम पत्रिका को अपना सहयोग प्रदान करने पर हम इनका हार्दिक बधाई के साथ बहुत-बहुत साधुवाद ज्ञापित करते हैं



Shri Sohan Patil







VANSHAJ SPICES
REQUIRES
DISTRIBUTORS & WHOLESALERS
ON
PAN INDIA BASIS

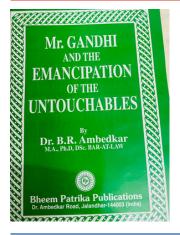


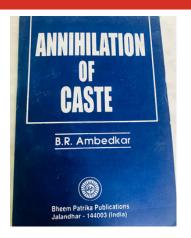


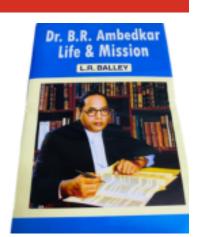


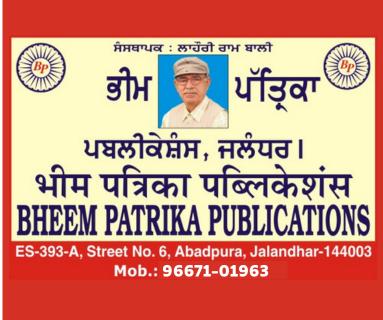
#### **BOOKS** Vol.1, Issue 25

# **Books in English**

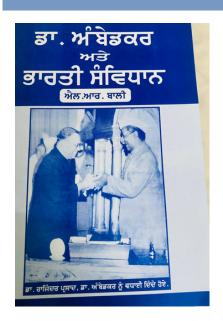


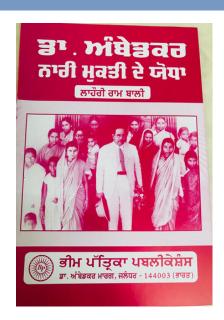






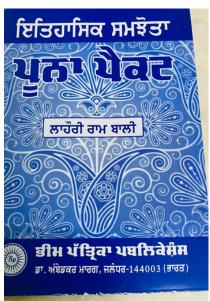
## <u>Books in Punjabi</u>

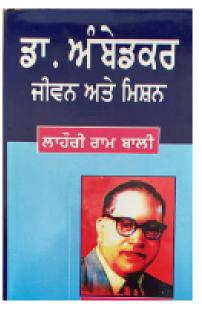


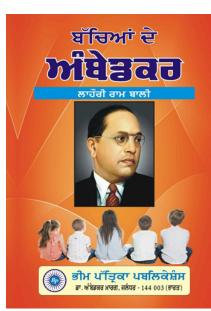






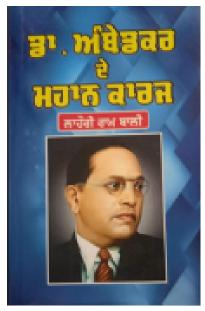


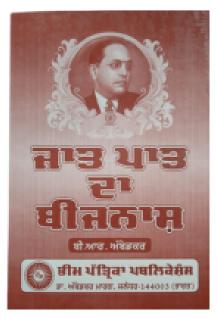


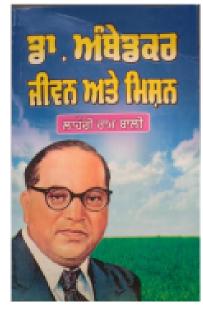


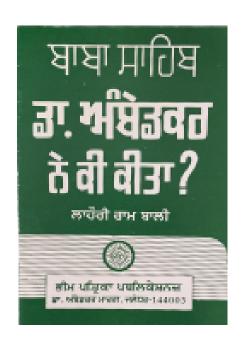


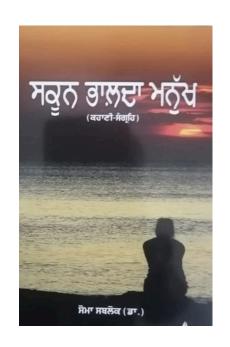












### Disclaimer

Views expressed in the article are personal" means that the opinions and perspectives presented within the article belong solely to the author and do not necessarily reflect the views of Bheem Patrika . it's a disclaimer stating that the writer is expressing their own personal thoughts and not speaking on behalf of anyone else.

**BOOKS** 

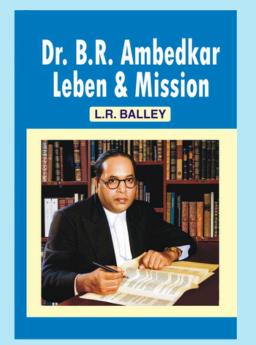


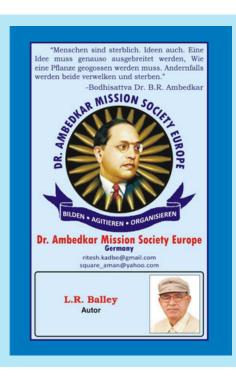




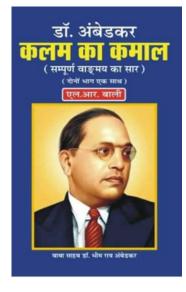
Vol.1, Issue 25



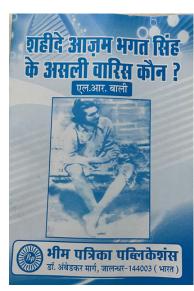




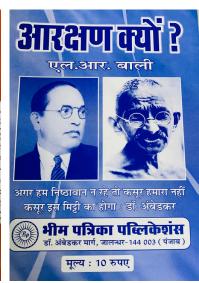
# **Books in Hindi**

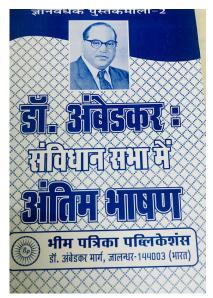


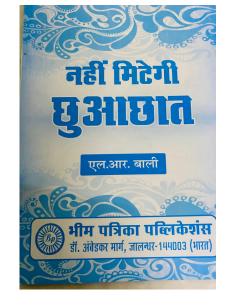




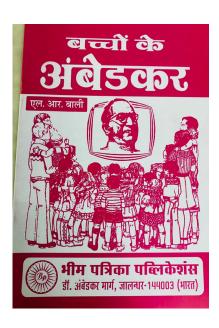


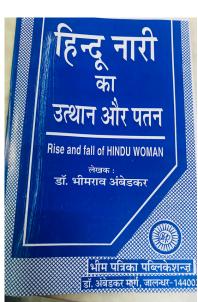


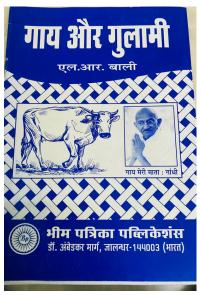


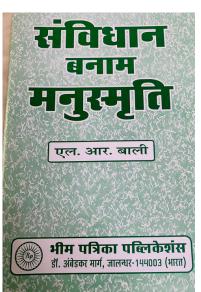


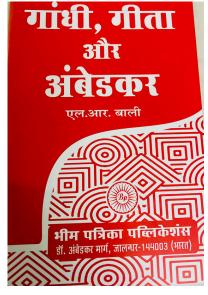


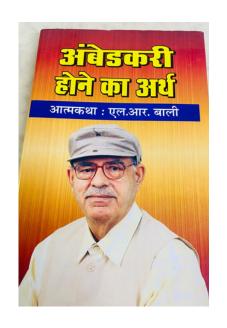




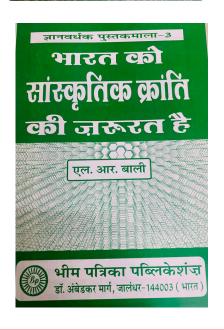


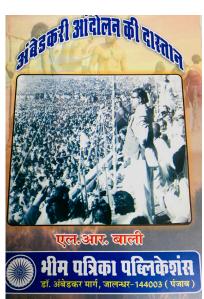












**BOOKS** 

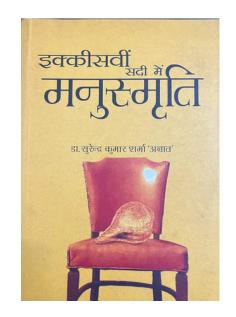






Vol.1, Issue 25

# **Books in Hindi**

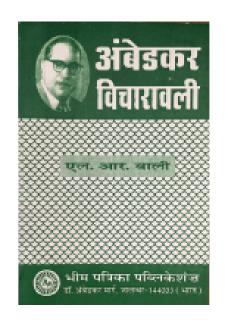




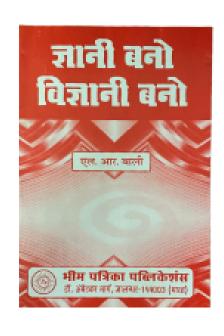


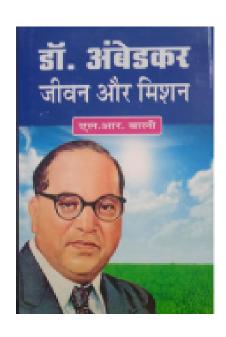




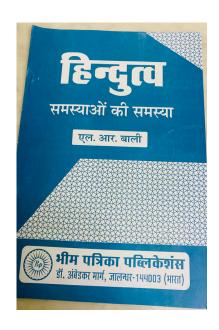


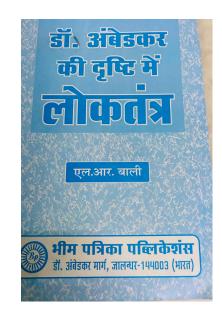












### **Contact Us:**

#### **Bheem Patrika Publications**

ES-393-A, Abadpura, Jalandhar city Distt. Jalandhar 144003

Mob. - +91 - 96671 01963 E-mail - rkumar1100e@gmail.com Web. - https://bheempatrika.in

# अस्वीकरण

लेख में व्यक्त विचार व्यक्तिगत हैं" का अर्थ है कि लेख के भीतर प्रस्तुत राय और दृष्टिकोण पूरी तरह से लेखक के हैं और जरूरी नहीं कि भीम पत्रिका के विचारों को प्रतिबिंबित करें। यह एक अस्वीकरण है जिसमें कहा गया है कि लेखक अपने निजी विचार व्यक्त कर रहे हैं और किसी और की ओर से नहीं बोल रहे हैं।